का प्रयोग होता है।

जैसे– c > कैमल (camal), k > काइट (kite), Ch > केमेस्ट्री (Chemistry), que > चैक (cheque), ck > बैक (back) आदि।

प्रत्येक भाषाओं के स्वनिमों की संख्या अलग–अलग होती है। यदि कोई ध्वनि एक बार निश्चित हो जाए कि स्वनिम है तो वह सदा प्रत्येक स्थिति में स्वनिम होगी। लिपि निर्माण में स्वनिम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आदर्श लिपि का निर्माण स्वनिम से ही होता है। स्वनिम के माध्यम से ही अंतर्राष्ट्रीय लिपि (I . N. P. A.) का रूप सामने आया है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. भोलानाथ तिवारी (भाषा विज्ञान)
2. देवेन्द्र नाथ शर्मा (भाषा विज्ञान)
3. net (e-pg पाठशाला)

•●•

"नारियाँ विभिन्न रूपों में अनेक नारिगत कष्ट सहती हैं, इसलिए उन्हें और नए कष्ट देने के बारे में सोचो ही मत।"

–डॉ. रमेश टण्डन फूलबंधिया

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA
P. G. COLLEGE, KORBA (C. G.)

11. स्वनिम के भेद एवं स्वनिमिक विश्लेषण

– डॉ0 दिनेश श्रीवास*

सेमेस्टर – I प्रश्नपत्र– IV (भाषा विज्ञान)

इकाई – 02 (स्वन प्रक्रिया)

स्वन विज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन, स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण

सेमेस्टर – II प्रश्नपत्र– IV (हिन्दी भाषा)

इकाई – 03 हिन्दी का भाषिक स्वरूप

हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था– खण्ड्य, खण्ड्येत्तर, हिन्दी शब्द रचना– उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना– लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया रूप। हिन्दी वाक्य–रचना, पदक्रम और अन्विति।

(समस्त पाठ्य–वस्तु प्रथम सेमेस्टर की इकाई – 02 स्वन प्रक्रिया के अन्तर्गत अंतिम दो चैप्टर– स्वनिम के भेद और स्वनिमिक विश्लेषण की है जबकि प्रथम खण्ड की पाठ्य–वस्तु द्वितीय सेमेस्टर की इकाई – 03 हिन्दी का भाषिक स्वरूप के अन्तर्गत 'हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था – खंड्य, खंड्येत्तर' की है।)

*जन्म : 10/12/1977, बिलासपुर (छ.ग.), माता : श्रीमती आशा देवी, पिता : श्री गणेश श्रीवास, शिक्षा : बी.एस–सी. (गणित), एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल. (हिन्दी), पी–एच.डी. – "मोहन राकेश के नाटक और व्यक्ति स्वातंत्र्यः एक विश्लेषण" शीर्षक पर, रूचि : कविता, कहानी, नाटक तथा शोध–पत्र लेखन में विशेष रूचि, कई काव्य संग्रह व कहानी संग्रह प्रकाशनाधीन, कार्य : 1. कई राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र का प्रकाशन, 2. दस से अधिक राष्ट्रीय सेमीनारों में शोध पत्र की प्रस्तुति, 3. सह–संयोजक के रूप राष्ट्रीय सेमीनार

GOVT. E.V.P.G. COLLEGE ★ KORBA ★